आज का पुरुषार्थ 4 July 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" जीवन में न्यारे बनना सीखें .. कुछ भी करते हुए डिटैच .. सम्पूर्ण निर्मोही बनना है "*

रूहानी मार्ग पर चलने वालों को **न्यारा पन** और **प्यारा पन**, बालक और मालिक इन सबका बेलेंस रखना होता है। ईश्वरीय मार्ग पर "**संतुलन**" ही हमारी बहुत बड़ी शोभा है।

दुनिया में लोग संतुलन रखना नहीं जानते। या तो काम में बहुत बिजी हो जाते है। या फिर योग करना है, मेडिटेशन करना है काम छोड़कर उसमें ही लग जाते है। दोनों ही ग़लत है।

हमें कर्मयोगी बनना है। सबके बीच में रहना है। परिवार में रहना है। इसलिए पहला अभ्यास हमारे इस देह से न्यारे पन का होना चाहिए। दुसरे के देह का जो आकर्षण होता है उससे भी न्यारा पन और ...

" मैं आत्मा हूँ .. इस देह की मालिक हूँ .. देह से न्यारी हूँ "

... यह भी अभ्यास बहुत अच्छा होना चाहिए। जैसे जैसे हमारा यह अभ्यास बढ़ेगा हम सबके प्यारे बनते जायेंगे। हम बहुत सुईट और सॉफ्ट होते जायेंगे।

हमारी बोल सबको प्यार देंगे। हमारी दृष्टि सबको प्यार देंगी। इसलिए इस अभ्यास को बहुत ही बढ़ाना चाहिए।

साथ साथ और भी कई **अभ्यास** करना चाहिए। कर्म किया, अब कर्म हमारा समाप्त हो गया। उसके इफेक्ट्स से न्यारे हो जाये।

ऐसा नहीं कि कर्म के बारे में, जो कुछ उसमें आपस एन्ड डाउनस हुए उसके बारें में सोचते ही रह जाये। याद रहे यह न्यारा पन ही हमें सफलता की ओर ले चलेगा।

आप कहेंगे, सोचेंगे नहीं तो आगे से connection कैसे करेंगे? सोचना और करेक्ट करना, यह तो करना ही है हमें।

लेकिन इसमें ही लगे रहे, इसकी जरूरत नहीं। इसके लिए हमें लम्बे समय देने की जरूरत नहीं पड़ेगी, अगर हम बहुत अच्छी स्थिति में रहेंगे।

तो हर जगह हमें न्यारे पन और प्यारे पन का बहुत अच्छा अभ्यास करना चाहिए। बाबा कहा करते थे ...

" जो न्यारी चीज होती है वह अटोमेटिकली सबको प्यारी लगती है "

... तो फिर कुछ भी हाथ नहीं आयेगा, जन्म जन्म के लिए। तो हमें अपनी अविनाशी कमाई करनी है, अलौकिक कमाई करनी है।

इसलिए **अन्तर्मुखी** होकर हर जगह न्यारे और प्यारे रहना सीखें। जैसे बाबा थे ....

बाबा जब आते थे, सबको अति प्यार देते थे। और जाते थे तो एक सेकण्ड में चले जाते, जैसे कि निर्मोही और डिटैच है। जैसे उनको किसी के साथ कोई लेना देना नहीं है।

आप भी यह करे ... मान लो फांन्शन में हिस्सा ले रहे है, वर्थ डे मनाया जा रहा है, उसे एन्जॉय करे और जब समाप्त हो तो सेकण्ड में उसके प्रभाव से न्यारे हो जाये।

यह प्रैक्टिस हर जगह हमें करनी है। हर फ़ील्ड में हमें करनी है। ताकि यह हमारी आदत बन जाये।

हम बाबा के बालक है। हमें नशा हो ...

" हम भगवान के बच्चे है "

... तो उनके सारे संस्कार भी हमारे अंदर है। उनकी प्रपार्टी के भी हम मालिक है। केवल **भविष्य** की नहीं वर्तमान में भी उनकी जो प्रपार्टी है उन सबके हम मालिक है।

चाहे वह **सुख** हो, **शान्ति** हो, **पवित्रता** व ज्ञान हो, **दया** भाव हो, **करुणा** भाव और महानतायें हो .. यह सब बाबा के प्रपार्टी है। हम इन सबके मालिक है। इन्हें हमें बढ़ाते चलना है।

और मालिक, उनके सम्पत्ति के भी मालिक। और उनके वर्से के भी हम अधिकारी। स्वमान में ऐसे स्थित हो जाये ...

" हम भगवान के मालिक बच्चे है .. मांगने वाले नहीं .. अधिकार से उससे सबकुछ प्राप्त करने वाले "

और संगठनों में .. जब कभी राय सलाह हो रही हो, तो जो बड़े या इन्चर्ज या निमित्त है .. वह जो कुछ भी हमें कहें सहज भाव से स्वीकार करे।

हमारी बात नहीं मानी गई इसके लिए हम परेशान न हो जाये। क्योंकि बहुत है जो इसी बात के कारण टकराव में आते है। और सारी रूहानियत नष्ट हो जाते है।

मालिक बनकर अपनी बात कहो ... यह होना ही चाहिए .. नहीं ... अगर नहीं होता तो उसे स्वीकार कर ले .. यह सोचकर कि ...

" ड्रामा में शायद यह होना अभी सम्भव नहीं है ..और सबकी जो राय निकली है शायद उसी में हम सबका कल्याण होगा "

... हम साक्षी होकर देखेंगे

तो इस तरह जीवन में सन्तुलन लेकर चलेंगे, बैलेन्स होगा .. तो सबकी व्लैसिंग्स मिलेगी। हम न्यारे प्यारे भी रहेंगे। और फिर हम इस मार्ग पर निरंतर आगे बढ़ते जायेंगे।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org